

RNI क्र. 50309/85/पृष्ठ संख्या 44/प्रकाशन तिथि 1 जून 2025

अंक 465 जून 2025

चंकमंक

बाल विज्ञान पत्रिका

मूल्य ₹50

1

अलविदा, जयन्त नार्लीकर!

अरविन्द गुप्ता



प्रोफेसर जयन्त नार्लीकर भारत के सबसे प्रसिद्ध खगोल-भौतिकविद थे। 1988 में, उन्होंने इंटर-यूनिवर्सिटी सेंटर फॉर एस्ट्रोनॉमी एंड एस्ट्रोफिज़िक्स (IUCAA) की स्थापना की। उनका सपना था कि उनके शोध संस्थान के एक हिस्से के रूप में बच्चों के लिए एक विज्ञान केन्द्र स्थापित किया जाए। क्यों? ताकि बच्चों में बचपन से ही विज्ञान के प्रति प्रेम पैदा किया जा सके।

उनका मानना था कि विज्ञान में गहन रुचि रखने वाले शोधार्थी आसमान से नहीं टपकते। यह ज़रूरी है कि उनमें बचपन से ही विज्ञान के प्रति लगाव व रुचि पैदा की जाए। उनके द्वारा स्थापित बच्चों के इस खोजपरक विज्ञान केन्द्र को 'मुक्तांगण विज्ञान शोधिका' नाम दिया गया।

IUCAA की शुरुआत से ही विज्ञान को बच्चों व आम लोगों तक पहुँचाने के लिए सशक्त प्रयास किए गए हैं। हर दूसरे शनिवार को एक लोकप्रिय विज्ञान व्याख्यान/प्रदर्शन आयोजित किया जाता था, जिसमें पुणे के सौ से अधिक स्कूलों के लगभग हजार बच्चे और शिक्षक भाग लेते थे। यह परम्परा आज भी जारी है।

प्रो. नार्लीकर ने एक 'स्टूडेंट समर इंटरनशिप प्रोग्राम' भी शुरू किया था। इसके तहत बच्चे गर्मी की छुट्टियों में वैज्ञानिकों के साथ मिलकर किसी प्रोजेक्ट पर काम करते थे। इससे बच्चों को 'विज्ञान करने' का वास्तविक अनुभव मिलता था।

2003 में प्रो. नार्लीकर ने मुझे IUCAA के बच्चों के विज्ञान केन्द्र में काम करने के लिए आमंत्रित किया। शुरुआत में मुझे किसी सरकारी संस्थान में काम करने में झिझक थी। इसलिए मैंने छह महीने के लिए ही जॉइन किया... लेकिन बाद में मैं वहाँ 11 साल तक काम करता रहा।

इस बीच मेरे साथ दो अद्भुत लोग जुड़े – डॉ. विदुला म्हेसकर (अब गरवारे बाल भवन, पुणे) और अशोक रुपनर (अब इन्द्राणी बालन विज्ञान केन्द्र, IISER)। 2004 में हमने प्रसिद्ध वेबसाइट arvindguptatoys.com शुरू की। हमने इस पर विज्ञान परियोजनाओं की तस्वीरें, वीडियो और लोकप्रिय पुस्तकें अपलोड करना शुरू किया। आज दुनिया भर में 12 करोड़ से अधिक बच्चे हमारे 'कचरे से खिलौने' नामक 2 मिनट का वीडियो देख चुके हैं। इस वेबसाइट पर तुम्हें प्रो. नार्लीकर की कई पुस्तकें भी मिल जाएँगी।

पेज 4 पर जारी...

चकमक

इस बार • • • •

अलविदा, जयन्त नालीकर! - अरविन्द गुप्ता	2
विज्ञान के प्रयोगों का कमाल - जयन्त नालीकर	5
खुशबू का घातक सफर - पीयूष सेकसरिया	6
घिन तो नहीं आती है... - नागार्जुन	8
कौन, क्या, कैसे खाता है? - विनोद रायना	10
बूढ़े जंगल - इश्तेयाक अहमद	14
क्यों-क्यों	18
चित्रपहेली	22
कला के आयाम - शेफाली जैन	24
नए पते - बीमारी की चिन्ता - अलिजा	28
अन्तर ढूँढो	31
मेहमान जो कभी गए ही नहीं - भाग 12	
- आर एस रेश्म राज, ए पी माधवन व साथी	24
माथापच्ची	34
मेरा पत्रा	36
तुम भी जानो	43
हवा बह चली - अमित कुमार	44



आवरण चित्र: प्रशान्त सोनी

सम्पादक

विनता विश्वनाथन

सह सम्पादक

कविता तिवारी

विज्ञान सलाहकार

सुशील जोशी

उमा सुधीर

डिजाइन

कनक शशि

सलाहकार

सी एन सुब्रह्मण्यम्

शशि सबलोक

वितरण

इनक राम साहू

एक प्रति : ₹ 50

सदस्यता शुल्क

(रजिस्टर्ड डाक सहित)

वार्षिक : ₹ 800

दो साल : ₹ 1450

तीन साल : ₹ 2250

चन्दा (एकलव्य के नाम से बने) मनीऑर्डर/चेक से भेज सकते हैं।

एकलव्य भोपाल के खाते में ऑनलाइन जमा करने के लिए विवरण:

बैंक का नाम व पता - स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, महावीर नगर, भोपाल

खाता नम्बर - 10107770248

IFSC कोड - SBIN0003867

कृपया खाते में राशि डालने के बाद इसकी पूरी जानकारी

accounts.pitara@eklavya.in पर ज़रूर दें।

फोन: +91 755 2977770 से 2 तक; ईमेल: chakmak@eklavya.in,

वेबसाइट: <https://www.eklavya.in/magazine-activity/chakmak-magazine>

चकमक

3

जून 2025

पेज 2 से जारी...

प्रो. नालीकर एक तर्कशील व्यक्ति थे। वे हमेशा अन्धविश्वास और छद्म-विज्ञान का खण्डन करते थे। डॉ. नरेन्द्र दाभोलकर अक्सर उनके साथ मिलकर काम करते थे। उन्हें विद्यालयों और महाविद्यालयों में व्याख्यान देने के लिए बड़े पैमाने पर आमंत्रित किया जाता था। अन्तिम वर्षों में उनकी पत्नी डॉ. मंगला नालीकर भी उनके साथ जाने लगीं। व्याख्यान के बाद बच्चों की भीड़ उनसे 'ऑटोग्राफ' लेने के लिए उमड़ पड़ती थी। लेकिन वे कभी ऑटोग्राफ नहीं देते थे। वे बच्चों से कहते थे, "पोस्टकार्ड पर कोई सवाल पूछो" और फिर अपने हस्ताक्षर सहित उसी पर उत्तर भेजते थे।

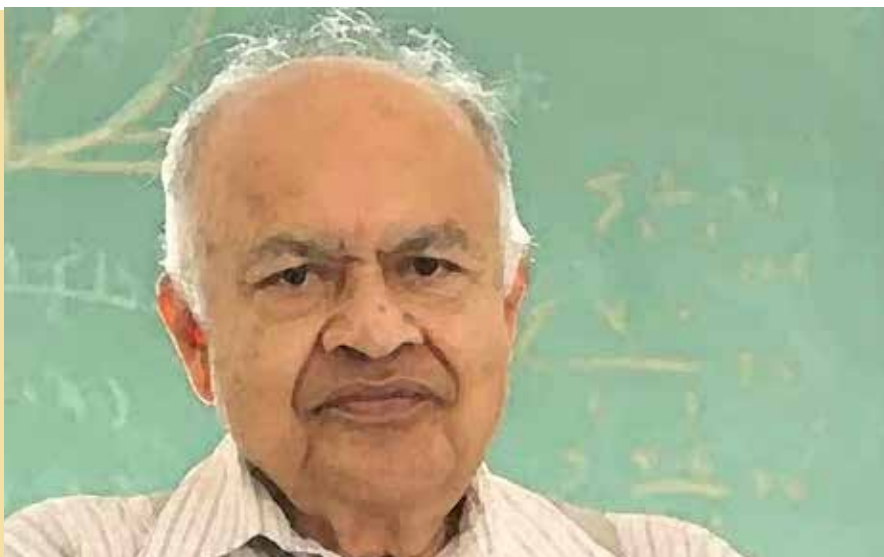
उन्हें देश का दूसरा सर्वोच्च नागरिक सम्मान पद्म विभूषण प्राप्त हुआ था। उन्हें विज्ञान के लोकप्रियकरण के लिए यूनेस्को का सर्वोच्च सम्मान कलिंगा पुरस्कार भी मिला था। उन्होंने अपनी मातृभाषा मराठी में बहुत सारे लेख व किताबें लिखीं। विज्ञान-कथा (Science fiction) लेखन की दुनिया में उनका नाम अग्रणी रहेगा। कुछ साल पहले उन्हें अपनी पुस्तक *माय टेल ऑफ़ फ़ोर सिटीज़* के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार भी मिला था। वे एनसीईआरटी की उस समिति के अध्यक्ष भी थे, जिसने स्कूली बच्चों के लिए विज्ञान और गणित की पाठ्यपुस्तकें तैयार कीं।



विज्ञान के प्रयोगों का कमाल

जयन्त नार्लीकर

चित्र: दिलीप चिंचालकर



शायद उस समय मैं सातवीं-आठवीं में था। एक दिन विज्ञान के पीरियड में शिक्षक कुछ सामान लेकर कक्षा में घुसे। किताब पढ़ने या फिर विज्ञान के किसी विषय पर एक-दो पन्ने लिखने की बजाय आज कुछ मज़ेदार देखने को मिलेगा, यह सोचकर मैं बहुत खुश हुआ। मेरे सहपाठियों की खुशी भी उनके चेहरों पर साफ झलक रही थी।

हमारे गुरुजी ने मेज़ पर काँच के दो बीकर रखे। एक बीकर में पानी लाने के लिए एक बच्चे को भेजा। फिर उन्होंने अपने थैले में से काँच की एक नली निकाली, जो दो जगहों पर 90-अंश पर मुड़ी थी। उसका आकार अँग्रेज़ी के दो L अक्षरों को जोड़कर बना था (चित्र देखें)। चित्र में दिखाए अनुसार उसकी AB भुजा CD भुजा की तुलना में छोटी थी और बिन्दु A बिन्दु D से काफी ऊपर था।

पानी से भरे बीकर में नली की AB भुजा को डुबोकर गुरुजी ने D सिरों से मुँह से हवा खींची, जैसा कि लोग स्ट्रॉ से करते हैं। इससे पूरी नली पानी से भर गई। फिर उन्होंने D सिरों को अपनी उँगली से बन्द किया और कक्षा से पूछा, “अगर D से उँगली हटाई जाए तो क्या होगा?” हमने बिना गहराई से सोचे-समझे जवाब दिया, “AB में A और CD में D सिरों से पानी बाहर गिरेगा।” मुस्कराते हुए गुरुजी ने नली से अपनी उँगली हटाई। और हमारे

आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। ऊपर के बीकर में से सारा पानी A से अन्दर जाकर D से बाहर निकल गया। मेज़ गीली न हो इसलिए गुरुजी ने D को एक खाली बीकर में रखा था जिससे उसमें पानी इकट्ठा हो सके। पानी A से B तक कैसे चढ़ा? इस चमत्कार के पीछे के विज्ञान को गुरुजी ने बाद में विस्तार से समझाया। उन्होंने यह भी बताया कि इस प्रक्रिया को ‘सायफन’ कहते हैं।

उत्तर मालूम होने के बावजूद मुझे यह एकदम अविश्वसनीय लगा और मैंने खुद इसका परीक्षण करने की ठानी। हमारे घर में बर्तन धोने और बाग-बगीचे में पानी देने के लिए ज़मीन से एक फुट ऊँचे चबूतरे पर एक पानी की टंकी रखी थी। काँच की नली की बजाय मैंने रबर की पाइप से ‘सायफन’ शुरू किया। बिना किसी मेहनत से मैंने टंकी का लगभग सारा पानी खाली कर डाला। प्रयोग सफल रहा। इसका मज़ा ही कुछ और था। प्रयोग करके मैंने उसके विज्ञान को जिस गहराई से समझा, वैसा मैं सिर्फ पढ़ने से नहीं समझ पाता।

ज़मीन पर पानी के तालाब को देखकर मेरी माँ ने अपना माथा पीटा। घर के काम आनेवाले सारे पानी को मैंने बहा दिया था। मैं तो माँ को सिर्फ ‘सायफन’ का मज़ा बताने गया था, पर...

मैं

चकमक

5

जून 2025

खुशबू का घातक सफर

पीयूष सेकसरिया

अनुवाद: विनता विश्वनाथन

चित्र: इशिता देबनाथ बिस्वास

हाल ही में मैं भारत के पूर्वोत्तर में स्थित त्रिपुरा की राजधानी अगरतला गया था। शहर के नाम पर मैंने ज़्यादा ध्यान नहीं दिया था जब तक कि मुझे अगर के पेड़ों के एक बागान में नहीं ले जाया गया।

बहुत कम ही ऐसे शहर होंगे जिनके नाम पेड़ों के नाम पर रखे गए हैं। मसलन 'वडोदरा' (बड़ौदा) का नाम 'वड' (बड़) के पेड़ पर रखा गया है। राजस्थान के सीकर ज़िले के प्रशासनिक मुख्यालय 'नीम का थाना' का नाम उस विशाल नीम के पेड़ पर रखा गया है जो मूल कस्बे के बीचोंबीच था। पक्के तौर पर ऐसे कुछ और उदाहरण भी होंगे — हरेक नाम अपने आप में एक दिलचस्प रिश्ता समेटे हुए। अगरतला नाम में 'तला' का ठीक-ठीक मतलब क्या है इस पर अलग-अलग मत हैं। लेकिन अगर तो पक्के में पेड़ से ही आया है।

मुझे अगर के पेड़ के बारे में और जानने की उत्सुकता हुई और इसके बारे में पढ़ने पर एक दिलचस्प व घातक इत्र की कहानी सामने आई।

पहली बात तो ये है कि अगर का पेड़ असल में पेड़ नहीं है। यह ऐक्विलेरिया किस्म के पेड़ों के तने का वो अन्दरूनी हिस्सा है जिसे हार्टवुड (heartwood) कहते हैं (चित्र 1 व 2)। दुनिया भर में ऐक्विलेरिया की 22 किस्में हैं। इनमें से 3 भारत में पाई जाती हैं और तीनों ही विलुप्ति की कगार पर हैं। इनमें से एक किस्म निकोबार द्वीपों में ही पाई जाती

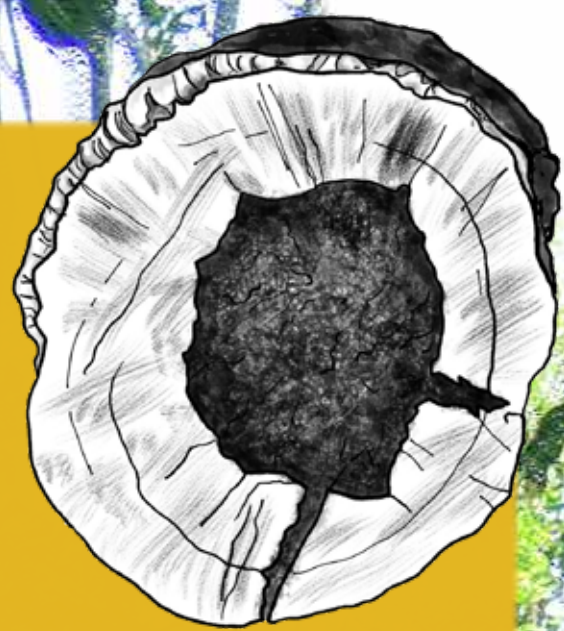
है। दूसरी किस्म मेघालय के एक छोटे-से हिस्से में सीमित है, जहाँ हाल ही में इसे 70 से भी ज़्यादा सालों बाद खोजा गया है। तीसरी किस्म देश में इन दोनों की तुलना ज़्यादा फैली लाव है। लेकिन जंगलों में इसे ढूँढ पाना बहुत मुश्किल है। तुम सोच रहे होगे कि यह इतनी दुर्लभ क्यों है? इसका जवाब है उस घातक इत्र की कहानी, जो अब मैं तुम्हें बताता हूँ।

ऐक्विलेरिया पेड़ों को एक खास तरह की फंगस संक्रमित करती है। इसका विरोध करने के लिए पेड़ एक खुशबूदार राल (resin) बनाता है। संक्रमण के पहले पेड़ों के हार्टवुड में यह खुशबू नहीं होती है और हार्टवुड का रंग भी फीका होता है। लेकिन जैसे-जैसे पेड़ और फंगस के बीच की जंग ज़ोर पकड़ती है, हार्टवुड धीरे-धीरे इस खुशबूदार राल से तरबतर हो जाता है और गाढ़ा व गहरे रंग का हो जाता है। खुशबू से भरा यह हार्टवुड अगरवुड कहलाता है। सदियों से इसकी अत्याधिक माँग रही है और इसने पूर्वोत्तर से लेकर मध्य पूर्व, मिस्र और उसके आगे का भी सफर तय किया है। सोचो ज़रा क्या खुशबूदार और घातक सफर है ये!

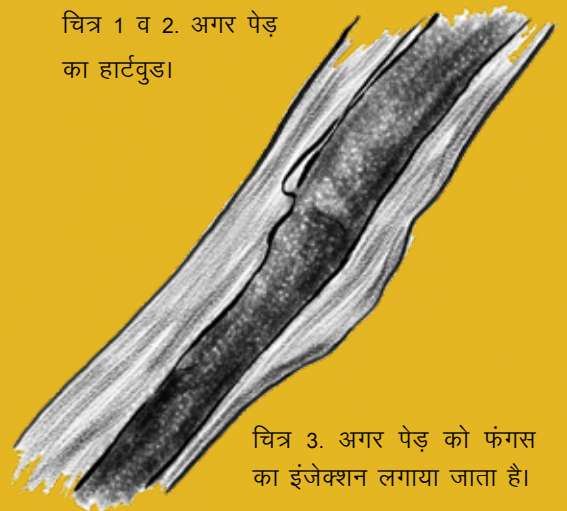
प्राकृतिक वनों में बहुत ही कम पेड़ों का संक्रमण होता है और वे अगरवुड बनाते हैं। इसलिए अब इन पेड़ों को बागानों में उगाया जाता है। पेड़ों को फंगस का इंजेक्शन लगाया जाता है (चित्र 3) ताकि वे उसके विरोधस्वरूप राल पैदा करें और इस प्रक्रिया से अगरवुड

बने। हालाँकि कुछ विशेषज्ञ मानते हैं कि इस तरह कृत्रिम तरीके से तैयार किए गए अगरवुड की गुणवत्ता निम्न होती है।

इस तरह भले ही पेड़ की खुशबूदार राल फंगस को हरा भी ले, तब भी भारी खुशबूदार हार्टवुड को उखाड़ने के लिए पेड़ को काटा जाता है। जंगलों में इसके दुर्लभ होने का यह एक महत्वपूर्ण कारण है। और यदि इसे बागानों में उगाया जाए तो भी इसकी यही किस्मत है - खुशबू के कारण मौत।



चित्र 1 व 2. अगर पेड़ का हार्टवुड।



चित्र 3. अगर पेड़ को फंगस का इंजेक्शन लगाया जाता है।




घिन तो नहीं आती है

चित्र: कैरन हेडॉक

नागार्जुन

पूरी स्पीड में है ट्राम
खाती है दचके पे दचके
सटता है बदन से बदन
पसीने से लथपथ।
छूती है निगाहों को
कथई दाँतों की मोटी मुस्कान
बेतरतीब मूँछों की थिरकन
सच-सच बतलाओ
घिन तो नहीं आती है?
जी तो नहीं कुढ़ता है?



कुली, मज़दूर हैं
बोझा ढोते हैं, खींचते हैं ठेला
धूल, धुआँ, भाप से पड़ता है साबका
थके-माँदे जहाँ-तहाँ हो जाते हैं ढेर
सपने में भी सुनते हैं धरती की धड़कन
आकर ट्राम के अन्दर पिछले डब्बे में
बैठ गए हैं इधर-उधर तुमसे सटकर
आपस में उनकी बतकही
सच-सच बतलाओ
जी तो नहीं कुढ़ता है?
घिन तो नहीं आती है?

दूध-सा धुला सादा लिबास है तुम्हारा
निकले हो शायद चौरंगी की हवा खाने
बैठना है पंखे के नीचे, अगले डब्बे में
ये तो बस इसी तरह
लगाएँगे ठहाके, सुरती फाँकेंगे
भरे मुँह बातें करेंगे अपने देस कोस की
सच-सच बतलाओ
अखरती तो नहीं इनकी सोहबत?
जी तो नहीं कुढ़ता है?
घिन तो नहीं आती है?



विनोद रायना

(जून 1950 - सितम्बर 2013)

विनोद रायना जाने-माने वैज्ञानिक और शिक्षाविद थे। मध्यप्रदेश में शैक्षिक नवाचार के अनूठे कार्यक्रम 'होशंगाबाद विज्ञान शिक्षण कार्यक्रम' के विकास और विस्तार में उन्होंने महत्वपूर्ण योगदान दिया। वे देश में साक्षरता और जन विज्ञान आन्दोलन के अग्रणी थे। शिक्षा अधिकार कानून का ड्राफ्ट तैयार करने और उसे लागू करवाने में बतौर शिक्षाविद उनकी विशेष भूमिका रही।

विनोद रायना एकलव्य के संस्थापक सदस्यों में से एक थे। कई वर्षों तक *चकमक* पत्रिका के सम्पादन की कमान भी उन्होंने संभाली। वे नियमित रूप से *चकमक* के लगभग हर अंक में लिखते थे। साथ ही सम्भावित व स्थापित लेखकों व कलाकारों को भी *चकमक* के लिए लिखने के लिए प्रेरित करते थे।

इस साल उनका 75वां जन्म वर्ष है। इस अवसर पर पढ़ो *चकमक* के जुलाई, 1991 के अंक में प्रकाशित उनका यह लेख।



कौन, क्या, कैसे खाता है?

विनोद रायना

गरमागरम जलेबी, पोहे और समोसे। ठण्डी लस्सी, आइसक्रीम, शरबत। छौंक लगी दाल, असली घी चुपड़ी रोटी और गरम मसाले की खुशबू उड़ाती सब्जी।

वाह!... क्या मज़ेदार खाना है! तुम्हारे मुँह में भी पानी भर आया ना!

घास, कीड़े-मकोड़े, नीलगिरी के पत्ते, जिन्दा मछली, चूहा, जानवरों की सड़ती लाशें..... छी! सारा मज़ा बिगाड़ दिया।

लेकिन भाई किसका मज़ा बिगाड़ दिया। हमारा-तुम्हारा ना! ज़रा गिद्ध, चीता, साँप, मकड़ी, मेंढक, किलकिला वगैरह से तो पूछो..... इन चीज़ों के नाम सुनकर उनके मुँह में पानी भर आया होगा!

अब यह सब तो कुदरत का खेल है। केवल इन्सान ही एकमात्र ऐसा प्राणी है जो आग पर तरह-तरह के पकवान तैयार करके खाता है। भोजन के लिए खेती करता है। पर शुरू में वह भी शिकार करता था या कन्दमूल ढूँढकर, खोदकर खाता था, ठीक वैसे ही जैसे आज भी कुछ जानवर करते हैं।

दुनिया में जितने जानवर, पक्षी व कीड़े-मकोड़े हैं, शायद उतने ही भोजन प्राप्त करने के तरीके हैं या भोजन के प्रकार हैं। अगर साँप, चूहे को खाता है तो चील, साँप को खाती है। यह क्रम इतना व्यवस्थित है कि अगर जंगल में एक भी पेड़ या जीव-जन्तु की नस्ल खतम हो जाती है तो उससे जुड़े तमाम अन्य प्राणी न केवल प्रभावित होते हैं, बल्कि उनके भी खतम होने की नौबत आ जाती है।

हमने पृथ्वी को भले ही भौगोलिक सीमाओं में बाँट लिया है, लेकिन जानवरों-पक्षियों के लिए इस विभाजन का कोई अर्थ नहीं है। साइबेरिया के पक्षी बर्फ व सर्दी से बचने के लिए जाड़े में हजारों मील उड़कर भारत आते हैं। विभिन्न प्रकार की मछलियाँ भोजन की तलाश में समुद्र के अन्दर इधर से उधर जाती हैं। अफ्रीका में मौसम के बदलाव के साथ जानवर उत्तर से दक्षिण तक कई देशों में फैल जाते हैं। मतलब जानवरों के लिए सरहद, धर्म, जाति आदि का कोई सवाल नहीं है, सवाल है भोजन का। काश इन्सान भी यही सबक सीखकर एक साथ रहते हुए सन्तुलित जीवन बिताता!

कुदरत ने एक-दूसरे पर आश्रित रहने की कितनी अनोखी व्यवस्था की यह इस मिसाल से समझी जा सकती है। गर्मी में जब अफ्रीका के जानवर उत्तर की ओर बढ़ते हैं तो सबसे पहले ज़ेब्रा चलते हैं। उन्हें वहाँ लगभग छह फुट ऊँची घास मिलती है। वे इस घास का ऊपरी हिस्सा खाते हैं। उनके पीछे दक्षिण से बड़े हिरण आते हैं, जो इस घास का बचा हुआ नीचे का हिस्सा खाते हैं। नीचे का हिस्सा खाने से ज़मीन पर लगे अन्य पौधे जो प्रोटीनयुक्त होते हैं, नज़र आने लगते हैं। इन्हें सबसे अन्त में पहुँचे छोटे अफ्रीकी हिरण, थोमसन गेज़ल खाते हैं। यही क्रम हर साल चलता रहता है। अगर क्रम गड़बड़ा जाए तो बड़े हिरण लम्बी घास नहीं खा पाएँगे। छोटे हिरणों को छोटे पौधे नहीं दिखेंगे और ज़ेब्रा परेशान हो जाएँगे। इस कुदरती व्यवस्था को इन्सान मशीनीकरण, सड़क, पर्यटन व अन्य ऐसी ही क्रियाओं से बिगाड़ता है, जिसका असर आसपास ही नहीं, बल्कि दूर-दूर तक और सदियों से चली आ रही व्यवस्था व उसके क्रम पर पड़ता है। खैर...

आओ देखते हैं कि कौन-कौन, क्या और कैसे खाता है!



1. दो टिटमाइस चिड़िया दूध पीने के लिए बोतल की कैप तोड़ती हुईं।
2. आर्चर फिश मुँह में पानी भरकर अपने शिकार पर पिचकारी की तरह छोड़ती है। जब शिकार घायल होकर गिरता है तो वह उसे चट कर जाती है।



3. अण्डे को निगलने के लिए साँप
महाशय अपना मुँह अण्डे से भी बड़ा
कर लेते हैं।



4. अफ्रीका के सेरेंगेटी
मैदान में घास चरते
जानवर। बरसात में यहाँ
ढेर सारी हरी-हरी घास
उगती है। लेकिन गर्मी में
घास की तलाश में उत्तर
की ओर जाना पड़ता है।
दस लाख से भी अधिक
जानवर एक साथ उत्तर
की ओर जाते हैं और फिर
बारिश में लौटते हैं।

5. भेड़िए झुण्ड में शिकार
करते हैं। किसी बड़े जानवर
जैसे नीलगाय, सांभर आदि
के पीछे ये लग जाँएँ तो
उसे दौड़ा-दौड़ाकर थका
डालते हैं और फिर एक
साथ झपट्टा मारकर काम
तमाम कर देते हैं। गीदड़ व
लकड़बग्घे भी इसी तरह
झुण्ड में शिकार करते हैं।





7. चीते से बचने की कोशिश करता हुआ एक अफ्रीकी जेब्रा। चीता दुनिया का सबसे तेज़ दौड़ने वाला जानवर है। एक मिनट तक यह लगभग सौ किलोमीटर प्रति घण्टे की रफ्तार से दौड़ सकता है। पर जल्दी थक भी जाता है। फिर भी शिकार पकड़ने के लिए मिनट भर की फुर्ती ही काफी होती है।

8. गिद्ध खुद शिकार नहीं करते। वे अपने आप मरे या दूसरे जानवरों द्वारा मारे गए शिकार को हथिया लेते हैं। आम तौर पर ये आकाश में मँडराते रहते हैं। जैसे ही ज़मीन पर कोई मरा हुआ जानवर आदि दिखता है, एक-एक करके इनका पूरा झुण्ड नीचे उतर आता है।



9. किलकिला (किंगफिशर) आम तौर पर पानी के किनारे किसी ऊँची जगह पर बैठकर मछली पर नज़र रखता है। जैसे ही कोई मछली सतह के पास दिखती है वह फुर्ती-से गोता लगाकर उसे अपनी चोंच से पकड़ लेता है। फिर किसी पेड़ पर बैठकर मछली को पटक-पटककर मार डालता है और फिर पूरी की पूरी निगल लेता है।



10. मकड़ी और उसका जाल। जानवर के जाले में आने पर मकड़ी उस हरकत का इन्तज़ार करती है जिससे पता चलता है कि कोई कीड़ा उस जाल में फँस गया है। फिर वह अपने जाल पर चलती हुई वहाँ पहुँचती है जहाँ उसका शिकार फँसा होता है।

बूढ़े जंगल

इशतेयाक अहमद

चित्र: प्रशान्त सोनी

शाम ढल रही थी। गोधूलि बेला में पहाड़ी नस्ल की छोटी-छोटी गायें झुण्ड में पहाड़ी ढलानों से उतर रही थीं। उनकी गर्दन में बँधी घण्टियाँ कुछ इस तरह बज रही थीं मानो सैकड़ों घुँघरू एक साथ बज रहे हों।

सूरज को डूबे एक अरसा हो चुका था। पर गर्मी में ज़रा भी कमी नहीं आई थी। गायों के झुण्डों के साथ चल रहे बुजुर्ग गर्मी से बेहाल और पसीने से तरबतर, थके कदमों से अपने गाँव को लौट रहे थे। भूख और प्यास ने उनकी तकलीफ को और भी ज़्यादा बढ़ा दिया था।

तभी अचानक से किसी के चिल्लाने की आवाज़ आई, “माल (मवेशी) सँभालो रे, बाघ (तेन्दुआ) आया रे!!!” मवेशी भी अजीब ढंग से रम्भाने और बिदकने लगे। बूढ़ी और थकी हुई काया अचानक चमक उठी। बूढ़ों ने झट-से पीठ पीछे बँधे फरसे-गँडासे निकाल लिए और हमले के लिए तैयार हो गए। भीमबाँध गाँव से कुछ नौजवान भी लाठी-बल्लम लिए नमूदार हो गए। तेन्दुए को शायद अन्दाज़ हो गया कि फिलहाल शिकार की कोशिश उसके लिए घातक हो सकती है और उसने इरादा व रास्ता दोनों बदल लिया और झाड़ियों के बीच दुबक गया।



भीमबाँध बिहार के जमुई और मुंगेर ज़िले की सरहद पर बसा एक पहाड़ी गाँव है, जंगलों से घिरा एक छोटा गाँव। इसी नाम से वहाँ एक अभयारण्य भी है जिसके बीचोंबीच गर्म पानी के कई सोते हैं। लोग मानते हैं कि यहाँ पाण्डव अपने गुप्तवास के दौरान घूमते हुए आए थे और भीम ने पहाड़ी चट्टानों को जोड़कर एक बाँध बनाने की शुरुआत की थी। पर किसी वजह से वे वहाँ से चले गए और बाँध अधूरा रह गया। इसी वजह से उस पूरे इलाके का नाम भीमबाँध हो गया।

खैर, यह तो रही किस्सों-मान्यताओं की बात। वहाँ अब इन्सान और तरह-तरह के जंगली जानवर रहते हैं। इन्सान गाँवों के भीतर रहते हैं और बहुत ज़रूरी होने पर ही जंगल का रुख करते हैं। वे इस बात का पूरा ध्यान रखते आए हैं कि उनकी वजह से जंगली जानवरों और चिड़ियों को कोई परेशानी न हो। जानवरों को भी अपनी मर्यादा पता है और वे गाँवों की ओर आने से परहेज़ करते आए हैं। गाँव के बुजुर्ग किसान भरत शाह बताते हैं कि 75 बरस के उनके जीवन काल में आज से 10-12 बरस पहले तक इन्सानों और जंगल के जीवों के बीच शायद ही कभी कोई टकराव हुआ हो।

उन्होंने बताया कि अब हालात तेज़ी-से बदल रहे हैं। जंगली जानवर अब अक्सर गाँवों में आ जाते हैं। अभी कुछ दिनों पहले ही एक भालू गाँव में घुस आया था। उसने कई पालतू जानवरों को ज़ख्मी कर दिया। उसके पहले एक तेन्दुआ शाम के समय चला आया और बाहर खेल रहे बच्चों पर उसने हमला कर दिया था। लकड़बग्घे और सियार तो अक्सर ही दिख जाते हैं और लोगों की मुर्गियों-मेमनों वगैरह को उठा ले जाते हैं। इतना ही नहीं कई तरह के जंगली पक्षी भी अब गाँवों में खड़ी फसलों पर टूट पड़ते हैं और किसानों को

भारी नुकसान उठाना पड़ता है। परेशान होकर लोग भी पलटकर हमले करने लगे हैं और चिड़ियों-जानवरों को पकड़ने वाले फन्दे लगाने लगे हैं।

लगभग आधी रात हो चुकी थी। हम लोग मारे गर्मी के सो नहीं पा रहे थे, सो बातचीत कर रहे थे। भरत जी के अलावा भी कई किसान वहीं आसपास बैठे थे। कम कद के लम्बे बालों वाले एक बेहद बुजुर्ग किसान बताने लगे कि कैसे पहले वे लोग जब मवेशियों को लेकर जंगल में जाते थे तो साथ खाना-पानी लेकर कभी न जाते थे। क्योंकि तब वहाँ खाने को दसियों तरह के कन्द-मूल और फल मिल जाया करते थे। पानी के छोटे-बड़े सोते भी बड़ी संख्या में मौजूद होते थे। “पर अब न तो हमारे खाने-पीने को कुछ मिलता है न जानवरों को कुछ मिलता है। भीषण गर्मी और सुखाड़ जैसे हालात की वजह से जंगल में दाना-पानी की कमी हो रही है और छोटे शाकाहारी जानवरों की संख्या में भी कमी हो रही है। उनको खाने वाले मांसाहारी जीव पानी और भोजन की तलाश में गाँवों में आ जाते हैं।” हमने उनसे इस सबका कारण पूछा तो वे पहले तो अचकचाए, फिर झुर्रियों से ढँकी आँखों में ढिबरी की बाती जैसी चमक लहराई। चुटकी लेने के अन्दाज़ में वे बोले, “वह तो आप बेहतर बताएँगे।”

हमने पूछा, “ऐसा क्यों?” तो बोले, “आप पढ़े-लिखे लोग हैं। हम लोग तो जाहिल-गँवार ठहरे। हम क्या बताएँ!”

हमने कहा, “पढ़े तो आप भी बहुत हैं। फर्क इतना है कि आपने कुदरत की किताब से पढ़ा है और हमने पेड़ काटकर उससे बने कागज़ की किताब से। और अगर हमारी पढ़ाई से सब कुछ पता ही चल जाता तो हम आपके पास क्यों आते?”

थोड़े शान्त भाव से उन्होंने कहना शुरू किया, “कहीं खदान तो कहीं मकान बनाने के लिए कभी पेड़ काटे जा रहे हैं तो कभी पहाड़। जंगलों में कहीं बुलडोज़र चल रहे हैं तो कहीं डाइनमाइट से धमाके किए जा रहे हैं। इन सबसे पहाड़ की चट्टानें हिल जाती हैं और पानी या तो धमाकों से बनी दरारों में चला जाता है या फिर दूसरी दिशा की ढलान से होकर बहने लगता है। तेज़ गर्मी और लम्बे समय तक चलने वाले सूखे मौसम की वजह से भी जंगल के अन्दर पानी कम होने लगता है। कुछ बरसों से गर्मी के दिनों में तापमान और सुखाड़ जैसे हालात बन जा रहे हैं। इनकी वजह से जंगलों के भीतर अगलगी की घटनाएँ भी बढ़ गई हैं और वहाँ के पोखर-तालाब सूखने लगे हैं। जानवर बेचारे भी क्या करें? भूख-प्यास तो उन्हें भी लगती है तो भोजन-पानी को ढूँढते हुए वे गाँव में आ जाते हैं।”

आधी रात बीत रही थी और अब भी धरती गर्म थी। हवा बन्द थी, पर पसीने की रफ्तार थमने का नाम नहीं ले रही थी। भरत जी की पत्नी इमरती जी घर के अन्दर की गर्मी से परेशान होकर बाहर आ बैठी थीं। कहने लगीं, “जैसे गाँव में नौजवान नहीं रहे वैसे ही जंगल में भी बच्चे-बाले नहीं रहे। नहीं समझे? जंगल के बच्चे-बाले का मतलब है छोटे पेड़, लताएँ, झाड़ियाँ और घास-पात। जंगल में बड़े पेड़ों के साथ इन सबका होना भी ज़रूरी है। बिना इनके जंगल बूढ़ा और बीमार हो जाता है। जब जंगल खुद ही बीमार है तो वह दूसरों को सहारा क्या देगा? जंगली जीव बेचारे यतीम-दूअर की तरह इधर-उधर टऊआते फिरते हैं तो गाँव में भी चले आते हैं। देखिए कितनी गर्मी है! पानी पीते जाइए, पर प्यास है कि बुझती ही नहीं! बेचारे जानवरों की भूख-प्यास के बारे में कौन सोचता है? कहते हैं जानवर आदमखोर हो रहे हैं। सच तो यह है कि इन्सान आदमखोर हो गए हैं। जिसके पास जितना है वह उतना बड़ा आदमखोर है।”

“शहर में आपके घर में एसी तो होगा ना?” उन्होंने पूछा। हमने “हाँ” में जवाब दिया। “तो इस सुकुमार देह को कष्ट देने यहाँ क्यों चले आए? आपके यहाँ तो पूरा समय बिजली भी आती होगी!”



“जी!”

“पता नहीं हमारे यहाँ क्यों नहीं आती। दिन में तो आ भी जाती है पर रात में कट जाती है। शायद वह भी हमारे नौजवानों की तरह शहर में रहना पसन्द करती है!” कहकर वे



ताड़ का पंखा झलने लगीं।
शायद उन्होंने ढिबरी की
मद्धिम-सी रौशनी में चमकते
मेरे चेहरे पर बहते पसीने को
देख लिया था और हवा
करने लगी थीं।



जब जंगल खुद ही बीमार है तो वह दूसरों को सहारा क्या देगा? जंगली
जीव बेचारे यतीम-टूअर की तरह इधर-उधर टूटआते फिरते हैं तो गाँव में
भी चले आते हैं। देखिए कितनी गर्मी है! पानी पीते जाइए, पर प्यास है कि
बुझती ही नहीं! बेचारे जानवरों की भूख-प्यास के बारे में कौन सोचता है?
कहते हैं जानवर आदमखोर हो रहे हैं। सच तो यह है कि इन्सान आदमखोर
हो गए हैं। जिसके पास जितना है वह उतना बड़ा आदमखोर है।

चकमक

17

जून 2025



फिर आता है मेरा पसन्दीदा हिस्सा — मिट्टी के घड़े का पानी। न फ्रिज का इंझट, न बिजली की चिन्ता — लेकिन पानी ठण्डा और मीठा! एक घूँट लेते ही लगता है जैसे पूरे शरीर को राहत मिल गई हो। और हाँ, गर्मी में मज़ा तब आता है जब हम आम का पना और नींबू का शरबत पीते हैं। दादी हर दोपहर पना बनाती हैं और कहती हैं, “पियो बेटा, लू नहीं लगेगी!” नींबू का शरबत तो जैसे हमारी जान बचाता है — खट्टा-मीठा और बहुत मजेदार!



आँगन में पौधे लगाना मेरा और मेरे छोटे भाई का पसन्दीदा काम है। हम मिलकर तुलसी, मोगरा और पुदीना लगाते हैं। जैसे ही पानी डालते हैं, मिट्टी से उठती भीनी-भीनी खुशबू ऐसा एहसास कराती है जैसे धरती मुस्कुरा रही हो।

गाँव के बच्चे तवा नदी के किनारे ककड़ी और तरबूज उगाते हैं। दोपहर में हम सब वहीं जमा होते हैं। कोई तरबूज काटता है, कोई उसका रस निकालता है। और वो रस... ठण्डा-ठण्डा, मीठा-मीठा — जैसे गर्मी की सबसे प्यारी मिठाई!

पेड़ों की छाँव में लुका-छिपी खेलना तो और भी मज़ेदार होता है। नीम और पीपल के नीचे बैठकर कहानियाँ सुनना, हँसी-ठिठोली करना — लगता है जैसे गर्मी खुद भी खेल देखने आ गई हो और थोड़ी नरम पड़ गई हो!

तो ये हैं मेरे मज़ेदार और आसान तरीके गर्मी को मात देने के। तुम भी आजमाओ और गर्मी को कहो, “चल भाग यहाँ से!”

मैं अपने घर के आँगन में बैठ जाती हूँ। वहाँ पर रोज़ ठण्डी-ठण्डी हवा चलती रहती है। मेरे दादाजी ने घर एक ऐसी जगह पर बनाया है जहाँ ज़्यादा गर्मी नहीं पड़ती है। हमारे घर के आसपास काफी पेड़ हैं। जब लोग हमारे घर आते हैं तो वो भी कहते हैं कि आपने घर बहुत अच्छी जगह बनाया है। यहाँ गर्मी से काफी राहत है। गर्मी से बचने के लिए मैं घर पर कुल्फी भी बनाती हूँ और आँगन में बैठकर खाती हूँ।

चित्र: शाम्भवी, पहली, बिलाबॉग हाई स्कूल, वडोदरा, गुजरात





चित्रपहेली

बाएँ से दाएँ

ऊपर से नीचे

चक्रमक

22

जून 2025

सुडोकू 85

दिए हुए बॉक्स में 1 से 9 तक के अंक भरने हैं। आसान लग रहा है ना? पर ये अंक ऐसे ही नहीं भरने हैं। अंक भरते समय तुम्हें यह ध्यान रखना है कि 1 से 9 तक के अंक एक ही पंक्ति और स्तम्भ में दोहराए ना जाएँ। साथ ही साथ, गुलाबी लाइन से बने बॉक्स में तुमको नौ डब्बे दिख रहे होंगे। ध्यान रहे कि हर गुलाबी बॉक्स में भी 1 से 9 तक के अंक दुबारा ना आएँ। कठिन भी नहीं है, करके तो देखो।

	9	3		8	2	7	4	6
7			3			2		
	4	2	9	1				3
2					6			7
9				5	1		6	
	1		4					
4	7	9	6		8	1	3	5
3	2				5		7	
5	6	1	7	3		8	2	



कला के आयाम

सूटकेस में स्टूडियो

शेफाली जैन

सफर पर निकलने की तैयारी करने का मज़ा कुछ और ही होता है, खासकर जब तुम यह तय करते हो कि क्या-क्या सामान साथ ले जाओगे! क्या हैं वो चीज़ें जिन्हें तुम हमेशा अपने साथ ले जाना पसन्द करते हो? घर के बड़े तो ज़रूर कहते होंगे कि जितनी ज़रूरी हैं, उतनी ही चीज़ें साथ ले जाओ। यूँ ही बैग भारी मत करो। पर फिर भी, कुछ ना कुछ तो हम चोरी-छुपे साथ रख ही लेते हैं! आज मैं बताती हूँ कि मेरे दोस्त ब्लेज़ जोसेफ अपने सूटकेस में क्या खास चीज़ें ले जाते हैं।

ब्लेज़ एक कलाकार और कला शिक्षक हैं। वो जहाँ भी जाते हैं, उनका सूटकेस हमेशा उनके साथ जाता है। एक दिन किसी दोस्त ने उनसे हँसते हुए कह दिया था कि यार कुछ स्टाइलिश बैग वगैरह ले आओ। ये क्या सूटकेस लिए घूमते हो। पर ब्लेज़ को अपना सूटकेस बेहद प्यारा है और उसमें रखा सामान भी।

कुछ दिनों पहले मेरी ब्लेज़ से फिर मुलाकात हुई। ब्लेज़ और मैंने एक ही कॉलेज से आर्ट की पढ़ाई की थी। कॉलेज के बाद हमारा काम हमें अलग-अलग जगह ले गया। पर इसके बावजूद ब्लेज़ के साथ अक्सर मेरा मिलना-जुलना होता रहा। कभी-कभी साथ में कला कार्यशाला करना भी हुआ। हाँ, तो अभी जब मेरी ब्लेज़ से



चित्र 1. ब्लेज़ का सूटकेस जिसमें कला सामग्री और उनकी स्केचबुक हैं।

मुलाकात हुई, तब मेरा परिचय उसके सूटकेस से हुआ। और मैंने ब्लेज़ से कहा कि कुछ बताओ तो मुझे इसके बारे में।

कलाकार का साथी सूटकेस

ब्लेज़ से बात करना बड़ा दिलचस्प है। उनके पास अनुभवों का भण्डार है। बतौर कलाकार और कला शिक्षक उन्होंने बहुत सफर किए हैं और यह सूटकेस उनका चहेता साथी रहा है। ब्लेज़ इसके बिना कहीं जाते ही नहीं। वे कहते हैं कि इस सूटकेस के बिना उन्हें अधूरा-सा महसूस होता है। और कला ऐसी चीज़ है कि इच्छा हुई, या कोई दिलचस्प शख्स, माहौल या नज़ारा मिल गया तो फिर तुम्हारे पास उसे चित्र में तब्दील करने के लिए हमेशा इन्तज़ाम तो होना ही चाहिए ना। तो बस, यह सूटकेस उसी अचानक मिले मौके का इन्तज़ाम है।

तो चलो देखते हैं कि क्या-क्या है उनके सूटकेस में (चित्र 1)। कुछ स्केचबुक, पेंसिल, ड्राइंग के लिए चारकोल, वॉटर कलर का डब्बा, पाउडर रंग, बाँस का एक डब्बा जिसमें पेंट ब्रश हैं, कपड़े की चिन्दी ब्रश पोंछने के लिए, मार्किंग टेप, अलग-अलग किस्म के कागज़, राइस पेपर, केले (प्लान्टैन) से बना पेपर, बीज और मिट्टी भी।



मैंने पूछा, “पर ब्लेज़, कपड़े और टूथब्रश?”

ब्लेज़ बोले, “हाँ, हाँ, दो-तीन शर्ट ही तो रखनी हैं। इसके ऊपर आ जाएँगी।”

ज़मीं से जुड़े रंग

ब्लेज़ ने बताया कि उनका परिवार केरल के एक छोटे गाँव एडूर में रहता है। वहाँ उनकी ज़मीन है, खेती भी है। नारियल और सुपारी के पेड़ हैं, जिनकी छाँव में हल्दी उगाई जाती है। काली मिर्च, कोको, शकरकन्द, जिमीकन्द, अनानास, कटहल, प्लान्टैन और पपीता भी उगाए जाते हैं। जब ब्लेज़ सफर पर नहीं होते, तब गाँव लौट आते हैं और परिवार का खेती में हाथ बँटाते हैं। उन्हें खेत में काम करना बहुत पसन्द है। ज़मीन से इस जुड़ाव के चलते वे अक्सर मिट्टी का इस्तेमाल रंग की तरह करते हैं।

अगर तुम गौर करोगे, तो पाओगे कि जगह-जगह की मिट्टी का रंग अलग होता है। कर्नाटक के बेलगावी की मिट्टी सुर्ख लाल है, तो वहीं गुजरात में कई जगह काली मिट्टी है। मुल्तानी मिट्टी हल्की पीली होती है और कच्छ के रण में सफेद भी। मिट्टी के अलावा ब्लेज़ अपने खेत की हल्दी को पीले रंग के लिए इस्तेमाल करते हैं। खेत की जली लकड़ी से बना चारकोल काले रंग का काम करता है। अन्य रंगों के लिए ब्लेज़ खनिज के रंग का इस्तेमाल करते हैं, जैसे रैड ओकर (जो गेरु से बनता है), या फिर कोबाल्ट ब्लू (जो कोबाल्ट नामक खनिज से बनता है)।

बाज़ार में जो रंग मिलते हैं, जिनमें खनिज के रंग भी शामिल हैं, वे आम तौर पर सिंथेटिक यानी कृत्रिम होते हैं। पर ब्लेज़ को प्राकृतिक रंग ज़्यादा

पसन्द हैं, जो हमारी पृथ्वी को नुकसान नहीं पहुँचाते। इसके अलावा वे जहाँ भी पहुँचते हैं, वहाँ की मिट्टी अपने पैलेट में जोड़ लेते हैं। वे अपनी कला कार्यशालाओं में आए लोगों को भी स्थानीय प्राकृतिक रंगों का इस्तेमाल करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। ये रंग बिना किसी खर्च के आसानी से भी मिल जाते हैं।

हैंडमेड कागज़ और स्केचबुक

रंगों के अलावा ब्लेज़ के सूटकेस में प्राकृतिक चीज़ों से बने हैंडमेड कागज़ भी हैं। जैसे प्लान्टैन या फिर चावल के भूसे से बना कागज़ (राइस पेपर)। सामान्य कागज़ लकड़ी के गूदे से बनता है। इसके लिए पेड़ों को काटना पड़ता है। पर राइस पेपर और प्लान्टैन से बना पेपर वेस्ट सामग्री (यानी कि धान और केले/प्लान्टैन के पौधे जिन्हें फसल के बाद ज़्यादातर फेंका जाता है) से

चित्र 2. चरवाहा स्कूल में ब्लेज़ की कला कार्यशाला के दौरान चित्र बनाते लोग।





चित्र 3. डुंगरीपाड़ा में ब्लेज़ की कला कार्यशाला के दौरान पत्थरों से बनाए गए चित्र।



चित्र 4. डुंगरीपाड़ा में ब्लेज़ की कला कार्यशाला के दौरान चिन्दियों से बनाया गया एक चित्र।

बनता है। इसलिए ये 'इको-फ्रेंडली' भी है। इसका अनोखा टेक्सचर रंगों को अलग तरह से सोखता है। कभी हाथ लगे तो तुम भी आजमाकर देखना। ब्लेज़ ये कागज़ आदिवासी अकादमी, तेजगढ़ से लाए थे। उनकी इच्छा है कि अब वे ड्राइंग के लिए कागज़ खुद बनाएँ और कला कार्यशालाओं के दौरान औरों को बनाना सिखाएँ।

ब्लेज़ के सूटकेस में उनकी स्केचबुक भी हैं। इन स्केचबुक में वे अपने अनुभवों को चित्रों में उतारते हैं। सफर के दौरान बड़े कागज़ या कैनवास साथ ले जाना हमेशा सम्भव नहीं होता। इसलिए ब्लेज़ स्केचबुक ज़रूर साथ रखते हैं।

जहाँ पहुँचे, वहीं की सामग्री

ब्लेज़ ने एक बार मध्य प्रदेश में चरवाहा स्कूल (चित्र 2) प्रोग्राम के तहत कुछ कला कार्यशालाएँ कीं। घुमन्तू चरवाहों के बच्चे अक्सर पढ़ नहीं पाते क्योंकि उनके परिवार पशुओं को लेकर चारे की तलाश में घूमते रहते हैं। चरवाहा स्कूल एक प्रयोग है, जिसमें शिक्षक चरवाहों के साथ घूमते हैं या फिर जहाँ वे डेरा डालते हैं, वहीं थोड़े दिन स्कूल चलाते हैं। ऐसे घुमन्तू स्कूल में कला की सामग्री सब जगह उठाकर ले जाना हमेशा आसान

नहीं होता। तो ब्लेज़ ने समुदाय के बच्चों और बड़ों के साथ रंग के विकल्प (जैसे मिट्टी, गोबर, हल्दी, कपड़े की चिन्दियाँ, पत्थर आदि) से ही कलाकृतियाँ बनाना शुरू किया (चित्र 3 व चित्र 4)।

इसके अलावा ब्लेज़ आसपास के बाज़ार से ऐक्रेलिक इमल्शन पेंट, स्टेनर और ब्रश ले आते। जब भी बच्चों को अपनी व्यस्त दिनचर्या में थोड़ा समय मिलता, वे बैठकर इन चीज़ों से आकृतियाँ, म्यूरल और स्कल्पचर भी बनाते हैं। तो जैसे ब्लेज़ खुद के लिए सूटकेस में सामग्री बटोरते हैं, ठीक उसी तरह वे कार्यशालाओं के दौरान स्थानीय परिस्थिति को नज़र में रखते हुए कला की सामग्री भी जोड़ते हैं। और कार्यशाला के दौरान जब ड्राइंग या स्कल्पचर तैयार हो जाते हैं तो उनकी प्रदर्शनी वहीं पर दीवार, फर्श, घर के आँगन, कपड़े सुखाने की डोरी, मैदान आदि में लगा देते हैं ताकि सारा गाँव अपनी कला का मज़ा उठा सके।

सूटकेस में कला

कला के इतिहास में और भी कई कलाकार रहे हैं जिन्होंने सूटकेस का दिलचस्प इस्तेमाल किया है। जैसे फ्रेंच कलाकार मार्सेल दुषांप। दुषांप अपने सूटकेस में अपनी कला के छोटे रेप्लिका या फिर

नमूने रखते थे (चित्र 5)। काफी सालों पहले सेल्समैन (विक्रेता) कुछ इसी तरह अपने सामान के सैम्पल बाँटने घर-घर जाते थे। सूटकेस में नए डिटर्जेंट, क्रीम, शैम्पू, साबुन आदि के छोटे-छोटे सैम्पल पैकेट या शीशियाँ रखी होती थीं, जिन्हें वे मुफ्त में बाँटकर उनके बारे में जानकारी देते थे। सेल्समैन तो नए सामान के खरीददार बढ़ाने के लिए मुफ्त में सैम्पल बाँटते थे। पर दुषांप जब इस तरह कला के विक्रेता बनकर घूमते, तब उनका मकसद कुछ और था। इसे कला के व्यापारीकरण पर दुषांप की टिप्पणी की तरह देखा जा सकता है।

एक और कलाकार हैं, एलेक्जेंडर काल्डर, जो अपने सूटकेस में एक मिनिएचर सर्कस लेकर घूमते थे (चित्र 6)। हाँ, ये सच है! उन्होंने इस सर्कस को खुद अपने हाथों से बनाया था। वे अक्सर अपने दोस्तों के बच्चों के बीच इस सर्कस को सूटकेस से निकालकर जमाते और फिर शुरू होता उनका परफॉरमेंस!! इसमें ट्रैपिज़ कलाकार, जोकर, करतब दिखाने वाले शेर, दो पैरों पर चलने वाला कुत्ता, सभी शामिल हैं! तुम इसे यूट्यूब पर इस QR कोड को स्कैन करके देख सकते हो।



इन कलाकारों ने एक मामूली सूटकेस को कैसे खास बना दिया, ये गौर करने की बात है ना? तुम भी सोचना कि तुम अपने बस्ते, झोले, पन्नी, बैग या फिर सूटकेस का इस्तेमाल किस



चित्र 5. मार्सेल दुषांप के सूटकेस में कला प्रदर्शनी



चित्र 6. एलेक्जेंडर काल्डर के सूटकेस में सर्कस।

तरह से कर सकते हो। शायद अगली बार सफर के दौरान तुम उसमें से जादू के खेल की सामग्री निकालो या फिर एक मिनिएचर थिएटर का सेट!



अम्मी की नज़र बार-बार घड़ी की ओर जा रही थी। वो घड़ी देखकर बुदबुदाती जा रही थीं, “ना जाने कहाँ रह गए, इतने टाइम तक तो आ जाते हैं।” और इधर, उनके हाथ लगातार सब्जी काटते जा रहे थे। जब उन्होंने देखा कि ताहिरा उन्हें देख रही है तो वो बोलीं, “तेरे अब्बू के बारे में सोच रही हूँ। अभी तक नहीं आए।”

ताहिरा ने अम्मी की हाँ मैं हाँ मिलाते हुए कहा, “आज तो अब्बू देर से गए हैं।”

तभी ताहिरा का भाई हसन दौड़ता हुआ घर में घुसा और मुँह-हाथ धोकर बस्ता खोलकर पलंग पर बैठ गया। अम्मी ने उससे पूछा, “क्या हुआ?”

तो वह पढ़ने की ऐक्टिंग करते हुए बोला, “अम्मी, कल पेपर है। याद कर रहा हूँ।”

यह सुनते ही ताहिरा ने लपककर कहा, “अब्बू आ गए होंगे। तभी तुम्हें पेपर की याद आ रही है। तुम्हें तो दिखाना है कि तुम कितने पढ़ाकू हो।”

हसन ने कहा, “अब्बू अभी नहीं आए। आते तो तुझे दिखाई नहीं देते।”

ताहिरा की आँखें दरवाज़े पर लगी हुई थीं। पट-पट, खसर-खसर की आवाज़ धीरे-धीरे पास आने लगी और उनके दरवाज़े पर आकर रुक गई। ताहिरा जल्दी से उठी और पर्दा उठाकर अम्मी से कहा, “देखो अम्मी, अब्बू आ गए।”

अम्मी ने अब्बू को देखते ही पूछा, “इतनी देर कैसे हो गई?”

अब्बू ने हाथ से इशारा किया और हाथ-मुँह धोने गुसलखाने में चले गए। अब्बू अपने में मशरूफ थे। तभी अम्मी ने ताहिरा को कहा कि कुछ मत बोलना। थके-हारे आए हैं। ताहिरा हाथ-पैर पटकती हुई कमरे में चली गई। अब्बू कमरे में आए और हसन को साइड कर बिस्तर पर लेट गए।

अम्मी ने कहा, “थक गए क्या?”

बीमारी की चिन्ता

अलिजा

चित्र: हबीब अली



वो कुछ नहीं बोले। ताहिरा पानी का गिलास लिए खड़ी थी। उन्होंने हाथ के इशारे से कहा कि अभी नहीं चाहिए। ताहिरा वापस चली गई। अम्मी भी खाना बनाने में व्यस्त हो गई।

अब्बू बिस्तर पर भी चैन से नहीं लेट पा रहे थे। वो कभी उबासी ले रहे थे तो कभी अँगड़ाई। उनका मुँह भी उतरा हुआ था। अम्मी ने अब्बू से पूछा, “क्या तबीयत ठीक नहीं है?”

उन्होंने कहा, “कुछ नहीं हुआ! मैं ठीक हूँ।”

अम्मी ने हसन को कहा, “अब्बू के पैर दबा दे, थक गए होंगे।”

अब्बू ने मना कर दिया और थोड़ा चिड़चिड़े-से होकर बोले, “मुझे कुछ नहीं हुआ है। बेकार की चिन्ता करना बन्द करो।”

अम्मी, हसन और ताहिरा सभी चुप हो गए। खाना बन चुका था। हसन ने अम्मी के पास आकर कहा, “अम्मी, भूख लगी है।”

अब्बू ने हसन की बात सुन ली थी। वो अम्मी की तरफ देखकर बोले, “बच्चों को खाना क्यों नहीं दे रही हो?”

अम्मी ने कहा, “सभी साथ खा लेंगे।”

अब्बू फिर नाराज़ होते हुए बोले, “इन्हें खाना दे दो। मैं बाद में खा लूँगा और हाँ तुम भी इन्हीं के साथ खा लो। जब मुझे भूख लगेगी तो मैं खाना माँग लूँगा।”



अम्मी ने दोनों बच्चों को खाना निकालकर दे दिया और खुद रसोई में बैठे-बैठे अब्बू को देखने लगीं। तभी अब्बू ने अम्मी की तरफ देखकर कहा, “एक रोटी ही देना। मुझे भूख नहीं है।”

अम्मी कुछ कह पातीं उसके पहले ही अब्बू फिर बोले, “चिन्ता मत करो, मैं ठीक हूँ।”

अम्मी ने अब्बू को खाना दिया और खुद भी खाने लगीं। अब्बू ने आधी रोटी ही खाई और हाथ धोने चले गए। तभी हसन ने धीरे-से कहा, “अब्बू को बुखार है शायद। उनका बदन बहुत गरम हो रहा है।”

अम्मी बस अब्बू को देखे जा रही थीं। पर अब्बू थे कि कुछ बताने का नाम ही नहीं ले रहे थे। हाथ धोने के बाद वो किचन में गए और एक गिलास पानी लेकर अपनी जेब से एक गोली निकालकर खा ली। उन्हें लगा किसी ने उन्हें नहीं देखा। पर अम्मी किचन में बर्तन रखने गई

हुई थीं तो उन्होंने अब्बू को ऐसा करते देख लिया। और फटाक-से पूछा, “ये किस चीज़ की दवाई खा रहे हो आप?”

अब्बू पहले तो चौंके, पर फिर उनके सवाल का जवाब देते हुए कहा, “अरे! कुछ नहीं थोड़ी थकान है ना। इसलिए दर्द की गोली ले ली।” अम्मी बोलीं, “सच बोल रहे हो?” अब्बू फिर प्यार-से बोले, “अरे! तू खामखाह चिन्ता कर रही है। मुझे कुछ नहीं हुआ है। मैं एकदम ठीक हूँ।” इतना कहकर वो बेड पर लेट गए। लेटते ही वो गहरी नींद में सो गए। हसन भी बेड पर जाकर सो गया।

अम्मी ने बिस्तर किया और ताहिरा के साथ ही लेट गईं। ताहिरा भी लेटते ही सो गईं। पर अम्मी थीं कि बस करवट पर करवट बदल रही थीं। कभी बैठतीं, तो कभी लेटतीं। और बार-बार अब्बू को देख सोचतीं कि वो ठीक हैं या नहीं। ऐसे ही सोचते-सोचते उनकी पूरी रात गुज़र गई।



अगले दिन अम्मी ब्रश करके नाश्ता बनाने में लग गई। अब्बू भी नहा-धोकर काम पर जाने के लिए तैयार हो गए। अम्मी उन्हें तैयार देखकर बोलीं, “कहाँ जा रहे हो?” अब्बू बोले, “काम पर।” अम्मी फिर बोलीं, “अरे! तबीयत ठीक नहीं है तो मत जाओ।” अब्बू बोले, “मैं ठीक हूँ। अगर नहीं गया तो ठेकेदार गुस्सा करेगा। क्या पता काम पर से ही निकाल दे।” अम्मी बोलीं, “अच्छा, तो नाश्ता तो कर लो।” अब्बू बोले, “मन नहीं है।” ये सुन अम्मी उनका लंच पैक करने लगीं। तो अब्बू उन्हें देखते हुए बोले, “लंच पैक मत करो। मुझे भूख नहीं है। अगर भूख लगेगी तो मैं बाहर से खा लूँगा। परेशान मत हो।” इतना कहकर वो निकल गए।

पर अम्मी बहुत दुखी थीं। अब्बू बार-बार बोल रहे थे कि चिन्ता मत कर। फिर भी अम्मी का परेशान होना तो लाज़िमी था। अब्बू बीमार थे और बीमारी की वजह मालूम नहीं थी। ऐसे में अम्मी कर भी क्या सकती थीं। बस इसी परेशानी में डूबे घर के कामों में लगी रहीं।



अलिजा को अंकुर क्लब से जुड़े हुए लगभग तीन साल हो गए हैं। वह दक्षिणपुरी, संजय कैम्प की बस्ती में रहती हैं और राजकीय सर्वोदय विद्यालय की छात्रा हैं। उन्हें घर के भीतर के माहौल को लिखना अच्छा लगता है।

चित्र: नेचिन वांग्मु थोंगची, सीनियर केजी, किङ्जी प्री स्कूल, दोइमुख, अरुणाचल प्रदेश



इन दोनों चित्रों में 8 से ज़्यादा अन्तर हैं। तुमने कितने ढूँढे?

दूँढो अन्तर

अकमक

31

जून 2025

भाग - 12

मेहमान जो कभी गए ही नहीं



अन्य देश से आए और हमारे देश में
सफलता से बसे हुए आक्रामक पौधों
की सीरिज़ की अगली कड़ी...

मैदान घास/लॉन ग्रास

वैज्ञानिक नाम: *सेंक्रस क्लैण्डैस्टिनस*
(*Cenchrus clandestinus*)

मूल: पूर्वी अफ्रीका की उच्च भूमि वाले
क्षेत्र

कैसे पहुँचा: एकदम ठीक-ठीक तो
नहीं पता कि इसे किस साल में लाया
गया। लेकिन माना जाता है कि इसे
बीसवीं सदी के शुरू में चारागाह की
घास के रूप में लाया गया था।

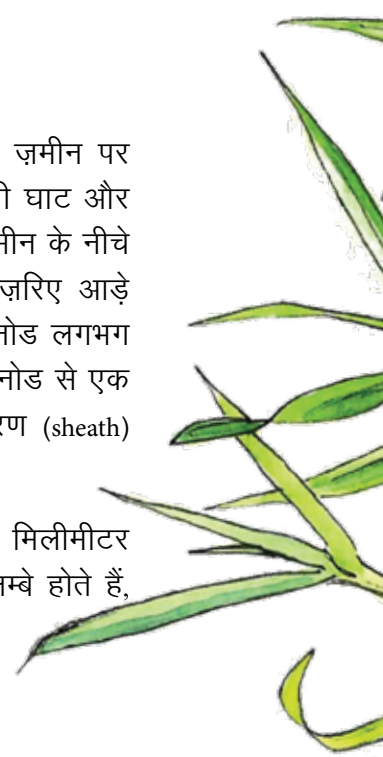
आर एस रेशू राज, ए पी माधवन, टी आर शंकर रमन, दिव्या मुडप्पा,
अनीता वर्गीस और अंकिला जे हिरेमथ

रूपान्तरण व अनुवाद: विनता विश्वनाथन

चित्र: रवि जाम्भेकर

मैदान घास एक बारहमासी घास है। ये ज़मीन पर
घनी चटाई की तरह फैलती है। ये पश्चिमी घाट और
हिमालय दोनों में पाई जाती है। ये घास ज़मीन के नीचे
राइज़ोम और ज़मीन के ऊपर रनर के ज़रिए आड़े
(horizontally) में फैलती है। रनर पर इंटरनोड लगभग
5 सेंटीमीटर की दूरी पर होते हैं। हर इंटरनोड से एक
पत्ता निकलता है जिसके नीचे एक आवरण (sheath)
होता है।

इसके पत्ते चटक हरे रंग के होते हैं। ये 3-4 मिलीमीटर
चौड़े और आम तौर पर कुछ सेंटीमीटर लम्बे होते हैं,



हालाँकि ये 15 सेंटीमीटर की लम्बाई तक बढ़ सकते हैं। पत्ते का डण्ठल जहाँ तने से जुड़ता है वहाँ एक पट्टीनुमा पतला उभार (लिग्यूल) होता है। लिग्यूल के किनारे रोएंदार होते हैं। इस घास के फूल ना तो आसानी से नज़र आते हैं और ना ही आकर्षक होते हैं।



प्रवेश



स्वाभाविक



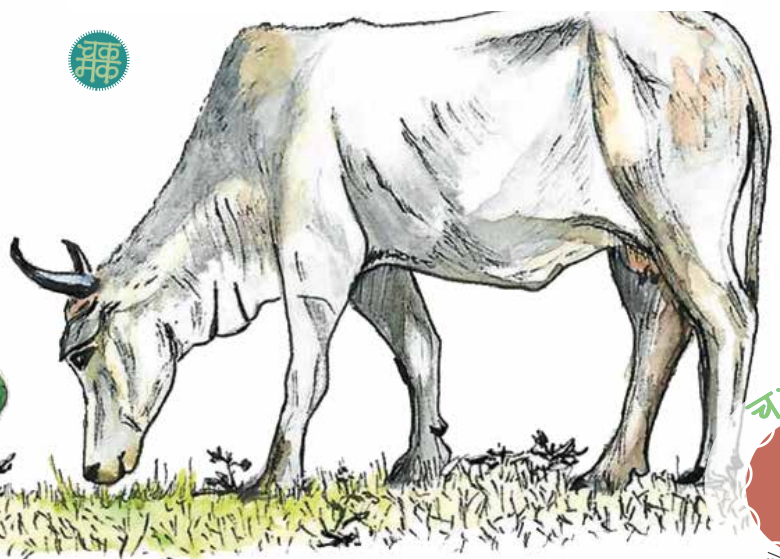
मूल जगह दर्ज नहीं

असर

मैदान घास बहुत ही तेज़ी-से फैलती है जिससे स्थानीय पौधों की जैव विविधता घट जाती है। ये अन्य स्थानीय पौधों को संसाधनों के लिए प्रतिस्पर्धा में हरा देती है। चूँकि ये छाँव भी सह सकती है, इसलिए ये जंगलों में पेड़ों के नीचे भी फैल पाती है।

बन्दोबस्त

इसे हाथों से या किसी यंत्र से उखाड़ना आसान नहीं है क्योंकि इसकी जड़ें काफी गहराई तक पहुँच सकती हैं। इसके राइज़ोम मिट्टी में 30 सेंटीमीटर की गहराई तक घुस सकते हैं। इसलिए इस घास को पूरी तरह हटाने के लिए लम्बे समय तक शुष्क रही परिस्थितियों में भारी मशीनों का इस्तेमाल करना कारगर होता है।



चक्रमक

33

जून 2025

1. खाली खानों में 1 से 9 तक की संख्याएँ इस तरह भरो कि हर पंक्ति व कॉलम का गुणनफल सही हो जाए।

	×		×		=	30
×		×		×		
	×		×		=	189
×		×		×		
	×		×		=	64
×		×		×		
108		60		56		

5. पहली खाली जगह में जो शब्द तुम भरोगे, उसी को उलटकर दूसरी जगह पर भरना है। जैसे कि शाम को कितने **बजे** आपकी **जेब** कटी थी।

- उसे हर चीज को _____ के खाने की _____ लग गई है।
- मैंने कॉपी में तुम्हें अपना _____ लिखने के लिए _____ किया था।
- जब भी उसका _____ दुखी होता है, तो उसकी आँखें _____ हो जाती हैं।
- वह उसके _____ पर चपत _____ कर चला गया।

6.

दी गई ग्रिड में कई सारे रंगों के नाम छिपे हुए हैं। तुमने कितने ढूँढे?

2. तीन केतलियाँ हैं। उन पर ये चिप्पियाँ लगी हैं।

- इसमें पानी या चाय नहीं है।
- इसमें पानी या कॉफी नहीं है।
- इसमें चाय या कॉफी नहीं है।

क्या इसके आधार पर तुम बता सकते हो कि कौन-सी केतली में क्या है?

3. ज़ोया एक किताब पढ़ रही थी। उसने गौर किया कि आमने-सामने के दोनों पन्नों की संख्याओं का जोड़ 21 है। यदि इन दोनों संख्याओं को गुणा करें तो कौन-सी संख्या मिलेगी?

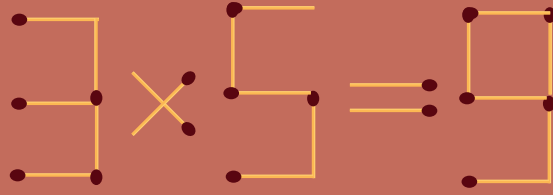


4.

बुधवार, शुक्रवार और रविवार का नाम लिए बिना लगातार आने वाले तीन दिनों के नाम बताओ।

चाँ	क	धू	स	र	बैं	क	त्थ	ई
स	फे	पी	हा	खा	की	पी	चाँ	ना
जी	गु	ला	बी	पी	च	आ	क	रं
में	आ	की	ल	बैं	पा	स	ले	गी
स	ह	पी	फि	जा	ग	मा	टी	ज़ी
मा	भू	दी	रो	ग	ना	नी	ला	क
ह	रा	मै	ज़ी	सा	का	सु	ना	स
का	पा	रू	जा	मु	नी	ला	बी	फे
चाँ	सु	न	ह	रा	गु	हा	मी	द

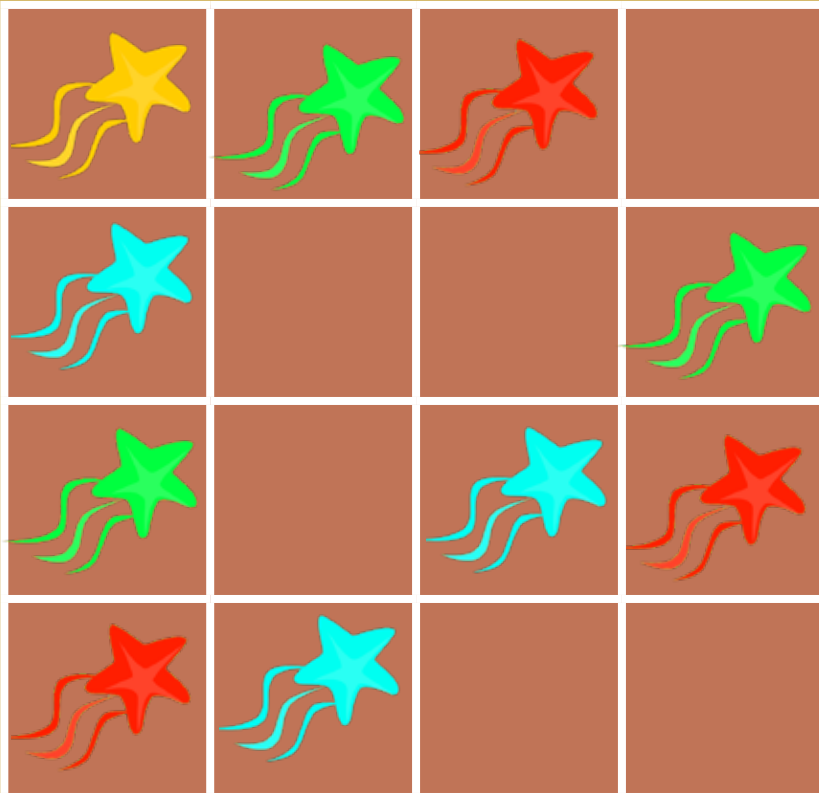
7. केवल एक तीली को इधर-उधर करके दिए गए समीकरण को सही करो।



8. हवा के झोंके से कुछ कागज़ पर ज़मीन इस तरह गिर गए हैं। बताओ कि ये कागज़ किस क्रम में ज़मीन पर गिरे होंगे?



9. दी गई ग्रिड की हर पंक्ति व हर कॉलम में अलग-अलग स्टार आना चाहिए। इस शर्त के आधार पर खाली जगहों में कौन-सा स्टार आएगा?



माथा पच्ची

फटाफट बताओ

शब्दकोश में कौन-सा शब्द गलत लिखा है?

(कलार)

किस महीने में 28 दिन होते हैं?

(मिनिमिम मिनम)

यह दोनों पहेलियाँ उत्तर प्रदेश के नोएडा ज़िले के शिव नाडर स्कूल की कक्षा 5 की छात्रा अदिति ने भेजी हैं।

शेर जंगल का राजा है, मगर रहता कहाँ है?

(है कलर में मिनर मि ग्राम)

सफेद-सफेद मैं होता हूँ, खुले बिस्तर में सोता हूँ

(कलार)

यह दोनों पहेलियाँ उत्तराखण्ड के उत्तरकाशी ज़िले के मातली के अजीम प्रेमजी स्कूल की कक्षा 6 के छात्र सोम ने भेजी हैं।

दो अक्षर का मेरा नाम सर को ढँकना मेरा काम
(मिडि)

चार पाँव पर चल न पाए चलते को भी वह बैठाए
(मिडि)

हमने मनाया बिहु

रोदाली दास
तीसरी, केन्द्रीय
विद्यालय
बारपेटा, असम

इस बार का रोंगाली बिहु मेरे लिए बहुत खास था। काहिनी चिल्ड्रन लाइब्रेरी में दूसरे साथियों के साथ बिहु मनाते हुए मैंने बहुत अच्छा महसूस किया। हम सभी बच्चे बिहु के पारम्परिक कपड़े पहनकर गए थे। मुझे मेखला चादोर बहुत अच्छा लगता है। मम्मी ने मुझे सुबह-सुबह मेखला चादोर पहनने में मदद की। मैंने गोगोना बजाया और दोस्तों के साथ बिहु नृत्य भी किया।

उसके बाद मैंने कणी झुंज खेला। कणी झुंज हास्य-उल्लास से भरा पारम्परिक खेल है जो बिहु के दौरान आस-पड़ोस के साथ खेला जाता है। इस खेल में दो लोग दो अण्डे लेते हैं और एक-दूसरे का अण्डा फोड़ने की कोशिश करते हैं। जिसका भी अण्डा टूटा वो खेल से बाहर हो जाता है।

मैं दो बार जीती इस खेल में। तीसरी बार एक साथी ने मेरा अण्डा तोड़ दिया। पहली बार मैंने कणी झुंज खेला। उसके बाद एक किताप (किताब)

चित्र: कीर्तिका दास, चौथी, सेंट मैरी इंग्लिश मीडियम हाई स्कूल, बारपेटा, असम



चक्रमक

36

जून 2025

के ऊपर चर्चा हुई थी और मजेदार बात यह है कि किताप का नाम भी कणी झुंज था। किताप में जो चित्र है, वो सब मुझे बहुत अच्छा लगा। और मुझे खुशी तब हुई जब हम सभी के टूटे हुए अण्डों से बनी अण्डा भुर्जी खाने को मिली। बिलकुल उस किताप की तरह।

हमने बिहु के ऊपर भी चर्चा की। समादृता बायन ने कहा कि बिहु वाली सुबह वो माह-हल्दी से नहाई। उसके बाद नया कपड़ा पहना, बड़ों से आशीर्वाद लिया और शाम को बिहु फंक्शन देखने गई। वहीं हर्षिल ने बताया कि बिहु की सुबह नहा-धोकर वो अपने माता-पिता के साथ कीर्तनघर गया और भगवान से आशीर्वाद लिया। रात को उसने घर पर जाल खाया। उसके नानी और दादी ने उसे बड़ी-बड़ी सी नई टी-शर्ट दी।

काहिनी लाइब्रेरी में रोज़ आने वाली हियाश्री ने बताया कि बिहु की सुबह उसकी मम्मी ने हाथिर सुर से मारा (जो कि एक तरह का नियम होता है)। उसके बाद नहा-धोकर नए कपड़े पहनकर वो कीर्तनघर गई भगवान से आशीर्वाद लेने।



चित्र: छाया अहिरवार, चौथी, एकलव्य फाउंडेशन, शिक्षा प्रोत्साहन केन्द्र, मरोड़ा, केसला, नर्मदापुरम, मध्य प्रदेश

1. गोगोना – एक पारम्परिक लोक वाद्य यंत्र।
2. जाल – एक तरीके की सब्जी जो बिहु के दौरान बारपेटा में सभी के घरों में बनती है।
3. माह-हल्दी – उड़द दाल और हल्दी का आसामी नाम।

पिज़्जे का ठेला

गोविन्द वर्मा
तीसरी, कम्पोजिट स्कूल
धुसाह, बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

गोविन्द भैया समोसे का ठेला लगाते थे। कल जब वो गाँव में आए तो दूर से ही पिज़्ज़ा-पिज़्ज़ा की आवाज़ आ रही थी। सब बच्चे उनके ठेले की ओर भागे तो देखा कि सच में पिज़्ज़ा बिक रहा था। सबसे छोटा पिज़्ज़ा 20 रुपए का था। मैंने वही खरीदकर खाया। मुझे वो समोसे जितना अच्छा नहीं लगा।



चित्र: अनन्त मिश्रा,
सातवीं, केन्द्रीय
विद्यालय, चित्तौड़गढ़,
राजस्थान



चित्र: गोविन्द वर्मा,
तीसरी, कम्पोजिट
स्कूल, धुसाह
बलरामपुर, उत्तर
प्रदेश

रमज़ान उल मुबारक!

कशफ़

तीसरी, सावित्रीबाई फुले
फातिमा शेख लाइब्रेरी
भोपाल, मध्य प्रदेश

चाँद रात से तरावीह चालू हो जाती है और दूसरे दिन से रोज़े चालू हो जाते हैं। रमज़ान में रोज़ा इफ्तार के लिए बहुत सारी चीज़ें बनाई जाती हैं। तरह-तरह के पापड़, चिप्स, पकौड़े, मंगोड़े इफ्तार में खाने के लिए तलते हैं। हमारी अम्मी तरह-तरह के फल भी इफ्तारी में सजाती हैं, जैसे कि आम, केला, तरबूज़, खरबूज़, अंगूर, अनार, अमरूद, मौसम्बी वगैरह। दिन भर रोज़ा रखने के बाद शाम को तोप चलने के बाद रोज़ा खोलते हैं और सहरी में जगते हैं। सहरी रात में 4:30 बजे की जाती है और फिर नमाज़ पढ़ते हैं। कुरान पढ़ते हैं।

चित्र: मानवी मुले, छठवीं, सेंट जोसेफ कॉन्वेंट स्कूल, खण्डवा, मध्य प्रदेश

साइकिल चलाई

प्रणाली देशमुख
पाँचवीं, विंध्यवासिनी हायर सैकेंडरी
स्कूल, नर्मदापुरम, मध्य प्रदेश

जब मैं पाँच साल की थी तो पापा ने मुझे साइकिल लाकर दी। एक दिन बरसात के समय मैं साइकिल चला रही थी। मेरी साइकिल कीचड़ में फिसलकर गिर गई। तब से मैंने एक-दो महीने साइकिल नहीं चलाई। बाद में मैंने साइकिल चलाई जब बारिश नहीं हो रही थी। फिर मैं गिरी नहीं और साइकिल चलाना सीख गई।



चकमक

39

जून 2025

झण्डा चौक



हमने मज़े किए

फरा कुरैशी
पाँचवीं, सी एम राइज़ विद्यालय, राहतगढ़, सागर, मध्य प्रदेश

ईद के दिन हम झण्डा चौक घूमने गए थे। वहाँ पर बहुत सारी दुकानें लगी थीं। हमने गुब्बारे की दुकान से रंग-बिरंगे गुब्बारे खरीदे। फिर हम लोगों ने एक चाट की दुकान पर फुल्की खाई। फिर हम तीसरी दुकान पर गए। वहाँ चाऊमीन खाई। झण्डा चौक पर कोई मज़े-से पान खा रहा था। कोई ठण्डा पी रहा था। हमने भी बहुत मज़े किए।

मढ़ई रे... मढ़ई

एकलव्य फाउंडेशन, विद्या
पण्डरों, उदयपुर, बीजाडाण्डी,
मण्डला के कक्षा सात के
बच्चों द्वारा रचित।

सुबह उठे फट-से
तैयार हुए सट-से।
आए ग्वाले गाँवों से
झूम रहे चावों से।
मढ़ई लगा मैदान में
पाल बिछा चौपाल में।
मज़ा ना आए जब तक
लड़ाई ना हो तब तक।
पापा ने दिए दस
मैंने खरीदी बस।
मम्मी ने दिए आठ
मैंने खाई चाट।
बज गए पूरे आठ
अब घर को सपाट।
मिठाई आई जब
बाँट के खाएँ सब
मामा आए मढ़ई से
गए मैदान गढ़ई से।



चित्र: राजन्ति तिर्की, दूसरी, शासकीय प्राथमिक शाला, जूनापारा, सोहगा, सरगुजा, छत्तीसगढ़

कर्मक

41

जून 2025

जवाब

1. $6 \times 5 \times 1 = 30$

$9 \times 3 \times 7 = 189$

$2 \times 4 \times 8 = 64$

॥
108

॥
60

॥
56

6.

चाँ	क	धू	स	र	बैं	क	त्थ	ई
स	फे	पी	हा	खा	की	पी	चॉ	ना
जी	गु	ला	बी	पी	च	आ	क	रं
में	आ	की	ल	बैं	पा	स	ले	गी
स	ह	पी	फि	जा	ग	मा	टी	ज़ी
मा	भू	दी	रो	ग	ना	नी	ला	क
ह	रा	मै	ज़ी	सा	का	सु	ना	स
का	पा	रू	जा	मु	नी	ला	बी	फे
चाँ	सु	न	ह	रा	गु	हा	मी	द

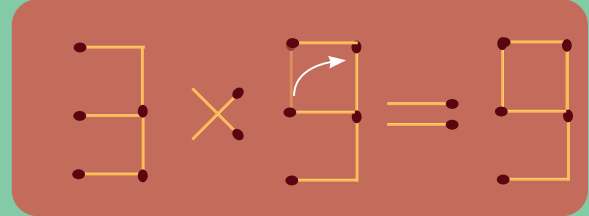
2. पहली केतली में कॉफी, दूसरी में चाय और तीसरी में पानी है।

3. 10 व 11 संख्या के पत्रे ही ऐसे हो सकते हैं जो आमने-सामने हों और जिनकी संख्याओं को योग 21 है। इसलिए इनका गुणनफल $10 \times 11 = 110$ होगा।

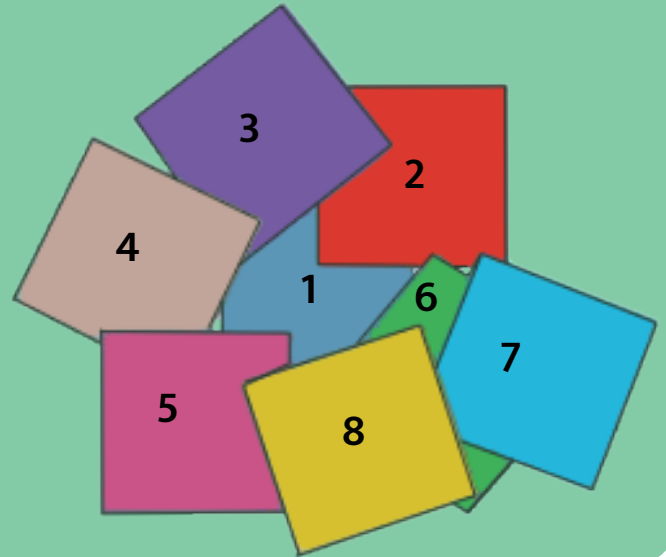
4. कल, आज और कल

5. तल, लत
नाम, मना
मन, नम
गाल, लगा

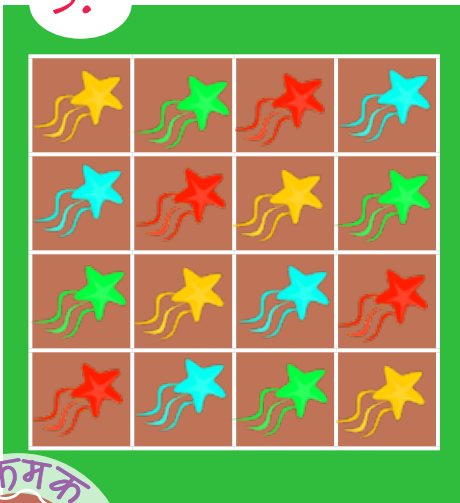
7.



8.



9.



इस अंक की चित्रपहेली का जवाब

1 सु	रा	2 ग	3 ब	र	सा	4 रा
र		5 ज	6 क	इ		ह
7 ब	ग	ला		न्द	8 प	टा
दू			9 छु		हे	ना
10 क	घ	11 ह	री		12 का	ली
				14 र		कशा
15 ब		16 क	बि	सा	17 न	
19 म	20 क	ठी			21 का	र
	छा		23 जु	रा	ब	म्ही

सुडोकू-85 का जवाब

1	9	3	5	8	2	7	4	6
7	8	5	3	6	4	2	9	1
6	4	2	9	1	7	5	8	3
2	5	4	8	9	6	3	1	7
9	3	7	2	5	1	4	6	8
8	1	6	4	7	3	9	5	2
4	7	9	6	2	8	1	3	5
3	2	8	1	4	5	6	7	9
5	6	1	7	3	9	8	2	4

तुम भी जानो

इस कला में मनुष्यों
से बेहतर बन्दर



किशोर कुमार के गाने यदि तुमने सुने होंगे तो पक्के में कभी ना कभी उनकी योडलिंग भी सुनी होगी। योडलिंग यानी जब वह शब्दों को छोड़ उडलई-उडलई गाने लगते हैं! मनुष्यों द्वारा संवाद के लिए योडलिंग का इस्तेमाल सैकड़ों सालों से हो रहा है। इसे पहली बार तेरहवीं सदी में दर्ज किया गया था। तब तिब्बती भिक्षु/सन्त दूर-दूर तक संवाद के लिए इसका इस्तेमाल करते थे।

अब पता चला है कि दक्षिण अमेरिका के जंगलों के कई किस्मों के बन्दर भी योडलिंग करते हैं – वह भी मनुष्यों से कहीं अधिक व्यापक आवृत्तियों में। जहाँ मनुष्य एक ऑक्टेव या सप्तक में योडलिंग करते हैं, वहीं ये बन्दर तीन ऑक्टेव में ऐसा कर पाते हैं। इनमें काला और सुनहरा हाउलर बन्दर, काले-टोपीदार गिलहरी बन्दर और पेरू मकड़ी बन्दर शामिल हैं।

बढ़ती गर्मी और बारिश

लगभग 200 साल से हम पृथ्वी का तापमान नापते आ रहे हैं। इस अन्तराल में पिछले 10 साल सबसे गर्म साल रहे हैं। और बढ़ते तापमान का एक नतीजा है पहले से ज़्यादा भारी बारिश और बाढ़। ऐसा इसलिए कि गरम हवा ज़्यादा नमी सोख सकती है। यह एक कारण है कि दुनिया के कई देशों ने मौसम की चरम स्थितियाँ देखी है – फिर चाहे वो गर्मी हो या बारिश। बढ़ती गर्मी के साथ कई जगहों में कुल मिलाकर साल में बारिश कम हो रही है। लेकिन जब बारिश होती है तो बहुत ज़्यादा होती है। ऐसी घटनाएँ भारत में भी हुई हैं।



चकमक

43

जून 2025

हवा बह चली

अमित कुमार
चित्र: अनन्या सिंह

हवा बह चली मीलों-मील
सोचा नहीं नतीजा
एक देश से दूजे आ गई
बिना पासपोर्ट-वीजा



प्रकाशक टुलटुल बिस्वास द्वारा स्वामी रैक्स डी रोजारियो के लिए एकलव्य फाउंडेशन, जमनालाल बजाज परिसर, जाटखेड़ी, भोपाल, मध्य प्रदेश 462 026
से प्रकाशित एवं मुद्रक आर के सिक्युप्रिंट प्रा. लि. द्वारा प्लॉट नम्बर 15-बी, गोविन्दपुरा इंडस्ट्रियल एरिया, गोविन्दपुरा, भोपाल - 462021 (फोन: 0755 - 2687589) से मुद्रित।
सम्पादक: विनता विश्वनाथन

कृष्ण

44

जून 2025